35. बढ़ही आवत देखि के, तरुवर रुदन कराय।
मैं अपंग संसै नहीं, पच्छी बसते आय॥ १३॥

Barhahee Aavat Dekhi Ke, Taruvar Rudan Karaaye.
Main Apang Sansai Nahin, Pachchee Basate Aaye..13..

The tree, seeing the carpenter coming in the form of the god of death, became very sad and began weeping. He began thinking—'I am handicapped, i.e. I cannot run away to save my life. He will definitely fell me. Even that hardly matters but what will happen to those birds who live on my branches? In the same manner, the worldly kind of people ramain sad caught in the clutches of delusion.'

35 .तू तू करता तू भया, मुझमें रही न हूंय।
वारी तेरे नाम पर, जित देखूं तित तूय॥

शब्दार्थ—मैं तू-तू करता हुआ (तुझे स्मरण करते-करते) तू ही हो गया हूँ (तेरे जैसा ही हो गया हूँ) मुझमें कोई अहं या वासना शेष नहीं रह गई है। मैं तो तेरे नाम पर न्यौछावर/कुर्बान हूँ कि निरन्तर तेरा ही ध्यान/स्मरण करते रहने के कारण अब (तू इस प्रकार मुझमें रम गया है कि) मैं जिधर देखता हूँ—उधर तू ही तू नजर आता है।

36 .सांस सास पर नाम लै, वृथा सांस मत खोय।
न जाने इस सांस का, आवन होय न होय॥

शब्दार्थ—प्रत्येक सांस के साथ प्रभु का नाम लो, सांसों को यं ही व्यर्थ मत जाने दो (यानि जीवन व्यर्थ मत जाने दो प्रतिपल प्रभु को स्मरण करो) फिर पता नहीं दुबारा यह सांस आए या न आए (जीवन अनिश्चित व क्षण भंगुर है।)

37 .संसारी से प्रीतड़ी, सरौ न एकौ काम।
दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम॥

शब्दार्थ—संसारी से प्रीति करने (आत्मीय सम्बन्ध बनाने) से एक भी कार्य सिद्ध नहीं होता। संशय में पड़कर दोनों हाथ ही खाली रह जाते हैं। न माया ही मिल पाती है, नही राम।